तुलसी प्रज्ञा २००२ ०४ (फोल्डर नं. ०२४५४१)

सम्पादक

डॉ. शान्ता जैन (मुमुक्षु) – हिन्दी

डॉ. जगत राम भट्टाचार्य - अंग्रेजी

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

जैन दर्शन में विश्व की अवधारणा – समणी मंगलप्रज्ञा----------३

सम्यग व्यवहार में अनेकान्तदृष्टि - डॉ. अशोककुमार जैन ---------- १५

अर्द्धमागधी आगमों में उपचार वक्रता – डॉ. हरिशंकर पाण्डेय ---------- २३

अपभ्रंश भाषा और साहित्य का संक्षिप्त ईतिहास – जैन साध्वी डॉ. मधुबाला ---------- ३३

जैन दर्शन में 'नय' सिद्धान्त का उदभव – डॉ. अनेकान्त कुमार जैन ---------- ४१

जैन साधना पद्धति – मनोऽनुशासनम – डॉ. हेमलता बोलिया ---------- ४७

महर्षि पाराशर का नैतिक दर्शन - डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश' ---------- ५५

आचार्य हरिभद्र की समन्वयात्मक दृष्टि - डॉ. जिनेन्द्र जैन ---------- ६१

साधना के दो तट – उत्सर्ग और अपवाद – साध्वी पीयूषप्रभा ---------- ६७

संस्कृत जैन स्तोत्र काव्य – प्रकाश वर्मा (सोनी) ---------- ७३

Acaranga – Bhasyam – Acaraya Mahaprajna ---------- 87

Presindential – Mahamahopadhyaya Haraprasad Sastri ---------- 105

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org